शेख़ फ़रीद – सबद १३३
इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तंनु न होइ ॥
सलोक, गुरु अमरदास, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८०

इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तंनु न होइ ॥
जो सह रते आपणे तितु तनि लोभु रतु न होइ ॥
भै पइऐ तनु खीणु होइ लोभु रतु विचहु जाइ ॥
जिउ बैसंतरि धातु सुधु होइ तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु गवाइ ॥
नानक ते जन सोहणे जि रते हरि रंगु लाइ ॥५२॥

सार: जब सही राह से भटकने का डर पैदा होता है, तब अंतरात्मा विनम्रता और सत्यनिष्ठा की शरण खोजती है। वह इच्छाएँ, जो पहले अत्यंत आकर्षक लगती थीं, धीरे-धीरे अपना प्रभाव खोने लगती हैं। जैसे-जैसे चेतना का विस्तार होता है, संग्रह और लालसा की प्रवृत्ति कम होने लगती है जिससे सार्थक आत्मचिंतन और स्पष्टता के लिए स्थान बनता है। मन की इस अवस्था में, हमें शांति मिलती है, ऐसी शांति जो जुनून की बेड़ियों से मुक्त होती है। यह बदलाव अहंकार की पकड़ को कमज़ोर कर, हमें ज़्यादा संतोषजनक और उद्देश्यपूर्ण जीवन की ओर ले जाता है।

इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तंनु न होइ ॥
यह शरीर पूर्णतः रक्त से बना है, रक्त के बिना शरीर का अस्तित्व संभव नहीं है। यह लाक्षणिक रूप से जीवन-शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, रक्त हमारे शारीरिक ओज और विचारों के प्रवाह, जो हमारी इच्छा, बंधन, अभिलाषा, भय और चेतना को समाहित करता है, दोनों का प्रतीक है।

जो सह रते आपणे तितु तनि लोभु रतु न होइ ॥
जो लोग आंतरिक चेतना से ओत-प्रोत होते हैं, वह लोभ को अपने भीतर स्थान नहीं देते। यह सचेत जीवन की उस अवस्था को दर्शाता है जिसमें अंतरात्मा भौतिक संपत्तियों से अप्रभावित रहती है।

भै पइऐ तनु खीणु होइ लोभु रतु विचहु जाइ ॥
जब मनुष्य अनैतिक होने से डरता है तब उसका शरीर भी विनम्र हो जाता है और उसके भीतर से लोभ का भाव समाप्त हो जाता है। यह ऐसे रूपांतरण का संकेत है जिसमें अहंकार क्षीण होने लगता है, जिसके परिणामस्वरूप वह अनियंत्रित इच्छाएँ भी मिटने लगती हैं जो कभी न बुझने वाली लालसा पर पनपती हैं।

जिउ बैसंतरि धातु सुधु होइ तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु गवाइ ॥
जिस प्रकार अग्नि धातु को शुद्ध करती है, उसी तरह, सर्वव्यापी चेतना का बोध विकृत सोच की अशुद्धियों को दूर करता है। यह ज्ञान के प्रकाश के माध्यम से होने वाली आंतरिक शुद्धि का प्रतीक है।

नानक ते जन सोहणे जि रते हरि रंगु लाइ ॥५२॥
नानक कहते हैं कि वह प्राणी सुंदर हैं जो सर्वव्यापी तत्व के रंग में रंगे हुए हैं। यह आंतरिक सुंदरता ऐसे अंतर्मन को दर्शाती है जो अलगाव से एकता की ओर परिवर्तित हो गया है।

तत्त्व: गुरु अमरदास और शेख़ फ़रीद इस बात का समर्थन करते हैं कि जो लोग पूरे मन से एकता के विचार को अपने जीवन में उतारते हैं, उनकी मानसिकता ऐसी होती है जिससे कृपा और भव्यता झलकती है। यह गहन अंतर्दृष्टि हमें अपने जीवन में एकता को विकसित करने और विविधता को अपनाने के लिए प्रेरित करती है ताकि हम अपने समुदायों के भीतर और समग्र रूप से प्रकृति के साथ गहरे जुड़ाव और समझ को बढ़ावा दे सकें।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com